



NEERAJ®

T.S.-4

भारतीय संस्कृति : पर्यटन परिदृष्टि

(Indian Culture: Perspective
for Tourism)

By: *Nityanand Tiwari*, M.A. (History)

**Question Bank cum Chapterwise Reference Book
Including Many Solved Question Papers**



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411,
23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 240/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : 1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006

E-mail: info@neerajignoubooks.com

Website: www.neerajignoubooks.com

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: *Competent Computers*

Printed at: *Novelty Printer*

Notes:

1. For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.
3. The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.
4. Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.
5. In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.
6. If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.
7. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
8. Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.
9. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
10. Subject to Delhi Jurisdiction only.

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website www.neerajignoubooks.com. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).

To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website www.neerajignoubooks.com.

No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.

We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).



NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006

Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: info@neerajignoubooks.com Website: www.neerajignoubooks.com

CONTENTS

भारतीय संस्कृति : पर्यटन के लिए परिप्रेक्ष्य (Indian Culture: Perspective for Tourism)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1-5
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1
Question Paper—June, 2011 (Solved)	1
Question Paper—June, 2010 (Solved)	1

S.No. Chapterwise Reference Book Page

भारतीय संस्कृति : एक परिचय

1. भारतीय संस्कृति और विरासत : ऐतिहासिक संदर्भ-1	1
2. भारतीय संस्कृति और विरासत : ऐतिहासिक संदर्भ-2	8
3. संस्कृति का संरक्षण	21
4. पर्यटन और संस्कृति : कुछ विचार	27

सामाजिक संरचना

5. सामाजिक-ऐतिहासिक परिदृश्य-I	30
6. सामाजिक-ऐतिहासिक परिदृश्य-II	35
7. रीति-रिवाज, अनुष्ठान और पंथ	42
8. मेले और त्योहार	49

ललित कलाएँ

9. नृत्य	54
10. संगीत	59
11. चित्रकला	62

<i>S.No.</i>	<i>Chapter</i>	<i>Page</i>
	<u>लोकप्रिय संस्कृति</u>	
12.	भारतीय रंगमंच	67
13.	भारतीय सिनेमा	75
	<u>स्थापत्य</u>	
14.	प्रमुख स्थापत्य शैलियाँ	83
15.	क्षेत्रीय स्थापत्य	88
16.	स्थापत्य के उपयोग आधारित प्रकार	93
17.	मूर्तिकला	96
	<u>पुरातत्त्व और पुरावशेष</u>	
18.	पुरातात्विक स्थल-I (पूर्व हड़प्पा और हड़प्पा)	100
19.	पुरातात्विक स्थल-II (उत्तर हड़प्पा)	106
20.	संग्रहालय और पुरावशेष	112
	<u>हस्तशिल्प : निरंतरता और परिवर्तन</u>	
21.	हस्तशिल्पों का बाजारीकरण	116
22.	मिट्टी, पत्थर, लकड़ी और धातु शिल्प	120
23.	हाथीदांत, रत्न और आभूषण	125
24.	वस्त्र और परिधान	130
	<u>जनजातीय संस्कृति</u>	
25.	अस्मिता निर्माण	135
26.	ऐतिहासिक और भौगोलिक विस्तार	138
27.	सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था	142
28.	जनजातियाँ और विकास संबंधी नीतियाँ	146
	<u>संस्कृति संबंधी नीतिगत मुद्दे</u>	
29.	सरकार	151
30.	व्यापार	157
31.	जनसंचार	161

**Sample Preview
of the
Solved
Sample Question
Papers**

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

(June - 2019)

(Solved)

भारतीय संस्कृति : पर्यटन परिदृष्टि

समय : 3 घण्टे /

/ अधिकतम अंक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

प्रश्न 1. भारतीय सांस्कृतिक धरोहर पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'संस्कृति और उसके निर्धारक तत्व', पृष्ठ-3, ऐतिहासिक विकासक्रम', अध्याय-2, पृष्ठ-9, 'उत्तर मध्य युग', पृष्ठ-10, 'आधुनिक युग', पृष्ठ-11, 'समकालीन युग'

प्रश्न 2. भारत के त्योहारों व मेलों की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए। त्योहारों व मेलों को पर्यटन गतिविधियों के रूप में प्रोत्साहित करने की संभावना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-8, पृष्ठ-49, 'परिचय', 'भारत के त्योहार एवं मेले : कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ', पृष्ठ-52, 'पर्यटन तथा मेले और त्योहार'

इसे भी देखें—संदर्भ—भारत के मेले व त्योहार पर्यटकों के लिए आकर्षण के मुख्य केन्द्र हैं। देश-विदेश के लोग इन्हें बड़े उत्साह से देखने आते हैं। इन्हें लोग न केवल अपने उत्साह और मनोरंजन के लिए देखते हैं बल्कि व्यावसायिक दृष्टि से भी लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दिल्ली में प्रगति मैदान में लगाने वाले व्यापार मेले में भारत के विभिन्न स्थानों के लोग अपने सामान बेचने के लिए स्टाल लेते हैं। इसी प्रकार मकर संक्राति पर पर्यटक विशेष रूप से पतंगबाजी के लिए अहमदाबाद जाना पसंद करते हैं और गणेश उत्सव के लिए महाराष्ट्र जाते हैं। भारत के रंग-बिरंगे त्योहार पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। भारत के हर प्रांत में अलग-अलग त्योहार, अलग-अलग ढंग से मनाए जाते हैं। लोगों के मन में उन्हें देखने की उत्सुकता रहती है। इसीलिए पर्यटन की दृष्टि से भारत के मेले व त्योहार बहुत महत्वपूर्ण हैं।

प्रश्न 3. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए—

(क) सांस्कृतिक गंतव्य

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-30, पृष्ठ-157, 'पुरातात्विक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थल'

(ख) प्रदर्शनपरक कलाएँ

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-30, पृष्ठ-59, 'मंचात्मक कलाएँ'

प्रश्न 4. भारतीय चित्रकलाओं के प्रमुख स्कूलों (संप्रदायों) की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-11, पृष्ठ-63, 'काल विभाजन', पृष्ठ-65, 'आधुनिक चित्रकला'

इसे भी देखें—धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभाव के परिणामस्वरूप विभिन्न भौगोलिक स्थानों में समय के कारण कई प्रकार की भारतीय पेंटिंग सामने आई हैं। भारत के चित्रों को मोटे तौर पर दीवार चित्रों और लघु चित्रों के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के भारतीय चित्र इन दो व्यापक श्रेणियों के अंतर्गत आते हैं, लेकिन फिर से उन्हें उनके विकास, उद्भव और शैली के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। लगभग सभी प्राचीन चित्रों को मंदिरों और गुफाओं की दीवार पर उकेरा गया है। लघु चित्रकारी कागज और कपड़े के छोटे कैनवास पर बनाई गई हैं। इस प्रकार की कला मुख्य रूप से मध्यकालीन युग में विकसित हुई, जो शाही जीवन को बयान करती है, जो अब काफी लोकप्रिय है।

तकनीक और माध्यम चित्रकला के दो प्रमुख पहलू हैं। इन पर निर्भर करते हुए, पेंटिंग्स को आगे चलकर पत्रित, मार्बल पेंटिंग, बाटिक, कलमकारी, सिल्क पेंटिंग, वेलवेट पेंटिंग, पाम लीफ एचिंग, ग्लास पेंटिंग आदि के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। कला के पैटर्न प्रचलन में हैं। अंततः धर्म और संस्कृति का भी चित्रों पर अत्यधिक प्रभाव है। लोक चित्र, इंडो-इस्लामिक कला और बौद्ध कला विभिन्न प्रकार हैं। ज्यादातर गुफाओं और मंदिरों की दीवारों पर बने चित्र हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म के कई पहलुओं को दर्शाते हैं।

गुफाओं में चित्र—भारतीय गुफा चित्रों को भारतीय चित्रों के प्रारंभिक प्रमाण के रूप में माना जाता है, जो गुफा की दीवारों और महलों को कैनवास के रूप में उपयोग करते हैं, जबकि लघु चित्र छोटे आकार के रंगीन, जटिल हस्तनिर्मित रोशनी हैं। विभिन्न प्रकार के चित्र भारतीय चित्रकला इतिहास

के विभिन्न अवधियों में विकसित हुए। कई शैलियाँ हैं, जिन्हें पहचाना जा सकता है। यह भीमबेटका की प्रागैतिहासिक गुफा पेंटिंग से शुरू होता है और अजंता की गुफाओं, एलोरा की गुफाओं और बाघ गुफा चित्रों के माध्यम से पनपा है। मध्य प्रदेश के भीमबेटका में कई गुफाओं में खोजे गए प्रागैतिहासिक चित्रों की शृंखला दर्ज है। ऊपरी पुरापाषाण काल से आरंभिक ऐतिहासिक और मध्यकाल तक के चित्रों की अवधि 600 वर्ष है। अजंता और एलोरा की गुफा पेंटिंग में उन बौद्ध भिक्षुओं का उल्लेख है, जिन्होंने अजंता की गुफाओं की दीवारों पर भगवान बुद्ध, जातक के जीवन और शिक्षाओं को चित्रित करने के लिए चित्रकारों को नियुक्त किया। सुंदर रंगों और शैली में उनकी वेशभूषा और आभूषणों के साथ आंकड़े अजंता में प्रकट हो सकते हैं, जबकि एलोरा की गुफाओं में वे चित्र हैं, जो ज्यादातर हिंदू देवताओं के हैं।

मध्ययुगीन काल की लघु चित्रों में मुगल चित्र, राजस्थानी चित्र शामिल हैं, जो कई राजाओं और शाही संरक्षण के अवलोकन और संरक्षण के तहत खिलते हैं।

मुगल पेंटिंग—मुगल की पेंटिंग, चित्रकला के इंडो-इस्लामिक शैली के समामेलन हैं, जो अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ सहित मुगल सम्राटों के अत्याचारों में फली-फूली, मुगल शाही समाज के दरबारी जीवन को बड़े पैमाने पर चित्रित किया। तंजौर पेंटिंग, शास्त्रीय दक्षिण भारतीय चित्रकला का रूप है, जो तमिलनाडु राज्य के तंजावुर गाँव में विकसित हुई है, जो अपनी समृद्धि और रूपों और ज्वलंत रंगों की कॉम्पैक्टनेस के लिए प्रसिद्ध है।

राजस्थानी पेंटिंग—ये पेंटिंग बेहतरीन गुणवत्ता की लघु पेंटिंग हैं, जो कागज पर और कपड़े के बड़े टुकड़ों पर बनाई जाती हैं। राज्य के विभिन्न भाग अपनी-अपनी शैली से चिपके रहते हैं और इस प्रकार चित्रों के विभिन्न रूप विद्यालयों के रूप में पहचाने जाते हैं। चित्रकला के कई प्रसिद्ध स्कूल मेवाड़, हाड़ोती, मारवाड़, किशनगढ़, अलवर और धुंधार हैं। राजस्थानी चित्रकला में मुगल चित्रों का स्पष्ट प्रभाव है, हालांकि यह अपने तरीके से काफी अलग है।

भारतीय चित्रों को उनके विभिन्न मूल के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है। कई प्रकारों में, मिथिला पेंटिंग या मधुबनी पेंटिंग, पहाड़ी पेंटिंग, लेपाक्षी पेंटिंग का उल्लेख किया जाना चाहिए।

मधुबनी पेंटिंग—मधुबनी नामक छोटे शहर की महिलाएँ और मिथिला के अन्य गाँव मुख्य रूप से मधुबनी पेंटिंग या मिथिला पेंटिंग करते हैं। पूर्व में वे छोटी झोपड़ी की मिट्टी की दीवारों पर बनाए गए थे, लेकिन अब उन्हें कागज और कपड़ों पर

भी उकेरा जाता है। विषय में हिंदू देवी-देवताओं, चंद्रमा और सूरज की प्राकृतिक वस्तुओं, तुलसी जैसे पवित्र पौधे और वनस्पति रंगों के उपयोग में इसकी विशेषता बनी हुई है।

पहाड़ी पेंटिंग्स—पहाड़ी पेंटिंग हिमालय की पृष्ठभूमि के रूप में लघु चित्रकला के सुंदर दृश्य हैं। राजपूतों की अवधि के दौरान हिमाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू और कश्मीर के पहाड़ी राज्यों में विकसित, वे बीहड़ प्रकृति का एक सार हैं। बशोली, गुलेर-कांगड़ा और सिख नाम के तीन अलग-अलग स्कूल हैं।

लेपाक्षी पेंटिंग—एक अन्य प्रकार की भारतीय पेंटिंग लेपाक्षी पेंटिंग है; आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले के एक छोटे से गाँव लेपाक्षी के मंदिर की दीवारों पर बनी एक दीवार की पेंटिंग।

प्रश्न 5. भारतीय बुनकरों द्वारा अपनायी जाने वाली विभिन्न तकनीकों के विशेष संदर्भ में भारतीय वस्त्र उद्योग पर निबन्ध लिखिए।

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-24, पृष्ठ-131, 'वस्त्र प्रौद्योगिकी'

प्रश्न 6. निम्नलिखित पर लघु टिप्पणियाँ लिखिए—

(क) स्थानीय संस्कृति पर पर्यटन के प्रभाव

उत्तर—संदर्भ—देखें अध्याय-4, पृष्ठ-27, 'परिचय', 'कुछ अंतर्राष्ट्रीय उदाहरणों का अध्ययन', पृष्ठ-28, 'कुछ भारतीय उदाहरण'

इसे भी देखें—स्थानीय लोगों और पर्यटकों की मुठभेड़ तीन मुख्य परिस्थितियों में होती है; एक तो जहाँ कोई पर्यटक कोई सामान या सेवा आतिथेय से मोल प्राप्त कर रहा है, दूसरे तब जब पर्यटक और आतिथेय एक-दूसरे को साथ-साथ पाते हैं (जैसे समुद्र तट पर या नाइट क्लब में) और जहाँ दोनों परस्पर बदलने योग्य वस्तुओं या विचारों सहित आमने-सामने होते हैं। इस प्रकार का कोई भी परस्पर कार्यकलाप दोनों को प्रभावित करता है विशेष रूप से संस्कृति के क्षेत्र में हमारा सांस्कृतिक, सामाजिक और नैतिक ढाँचा ऐसे अनेक मुख वाले राक्षस से बहुत अधिक प्रभावित होता है, जिसे जनपर्यटन कहते हैं। निम्नलिखित तीन उप भागों में संस्कृति पर पर्यटन के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है—

1. **स्थानीय प्रथाएँ**—पर्यटन देश/क्षेत्र की प्रत्येक सम्पत्ति अर्थात् सांस्कृतिक या प्राकृतिक सम्पत्ति को पर्यटक बाजार में बिकने वाले माल में बदल देता है। एक सीमा तक इस प्रक्रिया से स्थानीय सांस्कृतिक गतिवधियों को आर्थिक समर्थन प्राप्त होता है। इसके तहत स्थानीय संगीतकारों की सहायता की जाती है या सांस्कृतिक शिल्पकृति आदि बनाने में भी निवेश किया जाता है अन्यथा जो सार्वभौमीकरण (एकल अर्थव्यवस्था, एकरूप

Sample Preview of The Chapter

Published by:



**NEERAJ
PUBLICATIONS**

www.neerajbooks.com

भारतीय संस्कृति : पर्यटन परिदृष्टि

(Indian Culture: Perspective for Tourism)

भारतीय संस्कृति : एक परिचय

भारतीय संस्कृति और विरासत :
ऐतिहासिक संदर्भ-1



परिचय

विश्व इतिहास में भारतीय संस्कृति का वही स्थान एवं महत्त्व है, जो असंख्य दीपों के सम्मुख सूर्य का है। भारतीय संस्कृति अन्य संस्कृतियों से सर्वथा भिन्न तथा अनूठी है। अनेक देशों की संस्कृति समय-समय पर नष्ट होती रही है, किन्तु भारतीय संस्कृति आज भी का अस्तित्व विद्यमान है। भारतीय संस्कृति सृष्टि के इतिहास में सर्वाधिक प्राचीनतम है। भारतीय संस्कृति भारत की विरासत है। भारतीय संस्कृति में विद्यमान धर्म, अध्यात्म, ललित कलाएँ, ज्ञान-विज्ञान, विविध विधाएँ, नीति, विधि-विधान, जीवन-प्रणालियाँ और वे समस्त क्रियाकलाप उसे विशिष्ट बनाते हैं, जिन्होंने भारतीयों के सामाजिक और राजनीतिक विचारों को, धार्मिक और आर्थिक जीवन को, साहित्य, शिष्टाचार और नैतिकता को ढाला है। भारतीय संस्कृति का अपना विकासक्रम रहा है। इस विकासक्रम में भारतीय संस्कृति का विविध संस्कृतियों से संघर्ष, मिलन और सम्पर्क से परिवर्तन, परिवर्द्धन तथा आदान-प्रदान होता रहा है, जिसके कारण भारतीय संस्कृति में विविध श्रेष्ठ सांस्कृतिक तत्त्वों का संग्रह होता रहा है।

संस्कृति शब्द अंग्रेजी के 'कल्चर' (Culture) शब्द के अर्थ में लिया जाता है, किंतु इसका अर्थ बहुत व्यापक और बहुमुखी है। प्राचीन काल में संस्कृति का प्रयोग अधिक नहीं होता था। उससे संबंधित शब्द 'संस्कार' का अधिक प्रयोग था। संस्कारप्राप्त भाषा संस्कृत है और विद्या के संस्कार से संपन्न व्यक्ति को सुसंस्कृत

कहा जाता है। सुसंस्कृत व्यक्ति की गुण-संपत्ति है-संस्कृति। वास्तव में संस्कृति का संबंध संस्कार से है। इसका अर्थ हुआ साफ करना, स्वच्छ रखना, परिष्करण करना या उत्तम बनाना। जो स्थिति हमें किसी वस्तु या व्यवहार में जीवन-सिद्धि के निकट पहुँचाती है, वही श्रेष्ठ या उत्तम कहलाती है। इस कल्याण की साधना ही संस्कृति है। हमारे जीवन के आचार-विचारों के परिष्कार का विधान ही संस्कृति है। लोक जीवन के नाना संबंधों में औचित्य का पालन ही संस्कृति है। इसके अंतर्गत आत्मशोधन या आत्मसंयम भी आते हैं। इस प्रकार संस्कृति में विद्वता, पांडित्य और कौशल तीनों आते हैं, किंतु केवल इनसे संस्कृति नहीं बनती। इस प्रकार संस्कृति के अंतर्गत जहाँ आंतरिक आचार-व्यवहारों का स्थान है, वहाँ नाना ज्ञान-विज्ञानों का भी उससे निकट का संबंध है। संस्कृति और सभ्यता दोनों का अर्थ समान है। वास्तव में ये दो पहलू हैं, जो आपस में जुड़े हुए हैं। जीवन का परिष्कार संस्कृति है, तो उस परिष्कार की ओर उन्मुख करती है सभ्यता। सुख-सुविधा और संपत्ति से परिपूर्ण बहिरंग परिष्कार सभ्यता है। इस प्रकार संस्कृति का जीवन के आंतरिक पक्ष से संबंध है, तो सभ्यता का जीवन के बाह्य पक्ष से संबंधित है।

अध्याय का विहंगावलोकन

संस्कृति और विरासत : परिभाषा की समस्याएँ

संस्कृति एक गूढ़ शब्द है, जिसे सटीक रूप से परिभाषित कर पाना कठिन है। फिर भी किसी समाज, देश अथवा राष्ट्र में निवास

2 / NEERAJ : भारतीय संस्कृति : पर्यटन परिदृष्टि

करने वाले मानव समुदाय के धर्म, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान से संबंधित क्रियाकलाप, रीति-रिवाज, खाने-पीने के तरीके, आदर्श, संस्कार आदि के सामंजस्य को संस्कृति का नाम दिया जा सकता है। मनुष्य द्वारा अपनी बुद्धि एवं विवेक के प्रयोग से विचार और कर्म के क्षेत्र में किये गये सृजन को भी संस्कृति का नाम दिया जा सकता है। संस्कृति की सीमा का निर्धारण भी एक विवाद का विषय है। कुछ विद्वान सम्पूर्ण सामाजिक विरासत को संस्कृति मानते हैं, तो कुछ अभौतिक विरासत को। कुछ विद्वानों ने संस्कृति को मानवीय समाज की आन्तरिक अभिव्यक्ति माना है। हम जो-कुछ हैं, वह हमारी संस्कृति है। साधारणतः संस्कृति मनुष्य के विचार और व्यवहार का प्रतिमान होती है जिसमें मूल्यों, विश्वासों, आचार, नियमों, सामाजिक प्रतिमानों, राजनीतिक व आर्थिक संगठनों का समावेश रहता है।

संस्कृति शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की 'कृ' धातु से 'क्तिन' प्रत्यय और 'सम्' उपसर्ग के साथ हुई है अर्थात् सम् + कृ + क्त = संस्कृति। दरअसल संस्कृति शब्द का आशय अत्यंत व्यापक है। कुछ विद्वान संस्कृति को संस्कार का रूपान्तरित शब्द मानते हैं। इस कारण संस्कृत शब्द के समान संस्कृति में परिमार्जन अथवा परिष्कार के अतिरिक्त शिष्टता एवं सौजन्यता आदि अर्थों का भी अन्तर्भाव हो जाता है। अनेक विद्वानों ने अपने-अपने तरीके से संस्कृति को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

हाइट के अनुसार, "संस्कृति एक प्रतीकात्मक, निरंतर, संचयी एवं प्रगतिशील प्रक्रिया है।"

जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में, "संस्कृति का अर्थ मनुष्य का आन्तरिक विकास और उसकी नैतिक उन्नति है, पारस्परिक सद्व्यवहार और एक-दूसरे को समझने की शक्ति है।"

वस्तुतः संस्कृति से आशय मानव की मानसिक नैतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं कलात्मक जीवन की समस्त उपलब्धियों की समग्रता से है। वास्तव में संस्कृति की धारणा अत्यंत विस्तृत है। इसे एक या दो वाक्यों में परिभाषित करना संभव नहीं है, क्योंकि संस्कृति के अन्तर्गत भौतिक व अभौतिक तत्वों की वह जटिल सम्पूर्णता सम्मिलित होती है, जिसे हम समाज के सदस्य होने के नाते प्राप्त करते हैं तथा जिसके मध्य हमारा संपूर्ण जीवन व्यतीत होता है।

मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग करके विचार और कर्म के क्षेत्र में जो सृजन करता है, उसे संस्कृति कहते हैं। मनुष्य ने धर्म का जो विकास किया, दर्शनशास्त्र के रूप में जो चिंतन किया, साहित्य, संगीत तथा कला की जो सृष्टि की, सामूहिक जीवन को हितकर तथा सुखी बनाने के लिए जिन पदार्थों तथा संस्थाओं का विकास किया, उन सबका समावेश 'संस्कृति' में होता है। मनुष्य उन वस्तुओं से संबंध स्थापित करता है, जो उसके लिए उपयोगी हों। यह उसका सभ्य जीवन है। जब मनुष्य अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ हो सका, तब उसने सुसभ्य सुसंस्कृत समाज की स्थापना की। सभ्यता के इस निर्माण से ही मनुष्य सांस्कृतिक विकास के पथ पर अग्रसर हो सका है।

एक समाज के सदस्य के रूप में हम जो सोचते हैं और करते हैं, वह उस समाज की संस्कृति कहलाती है। इस प्रकार सामुदायिक

जीवन की सभी सामूहिक उपलब्धियाँ संस्कृति में समाहित हैं। बोलचाल की भाषा में संस्कृति के भौतिक पक्ष, जैसे-वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक उपलब्धियाँ सभ्यता के रूप में जानी जाती हैं और संस्कृति के अभौतिक पक्ष में सामाजिक जीवन की उपलब्धियाँ, जैसे-कला, संगीत, भाषा, दर्शनशास्त्र, धर्म तथा विज्ञान आदि सम्मिलित हैं।

संस्कृति और इसके निर्धारक तत्व

भारतीय संस्कृति के शाश्वत तत्व हैं-सत्यं, शिवं और सुन्दरं। इन शाश्वत तत्वों ने मानव-चेतना को सुसंस्कृत और परिष्कृत किया है। भारतीय संस्कृति का अनुशीलन करने पर विदित होता है कि अतीत के सभी युगों और परिस्थितियों में उसकी अन्तःधारणा अव्यवहृत रूप में निरंतर आगे बढ़ती रही। विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के संदर्भ में अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अत्यंत विकट और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उसने अपने स्वत्व तथा अस्तित्व की अक्षुण्णता को बनाए रखा। बाहरी तथा भीतरी युद्धों तथा शासन-सत्ता के परिवर्तनों के बावजूद भारत की सांस्कृतिक परंपरा अवरुद्ध नहीं हुई, अपितु विभिन्न धर्मों और जातियों के विश्वासों को अपने भीतर समाहित करके अपने को परिपुष्ट और समृद्ध ही किया है।

संस्कृति, समाज और इतिहास-भारत की वर्तमान संस्कृति अनेक संस्कृतियों के सम्मिश्रण का परिणाम है। इसे न केवल प्राचीन युग की विविध जातियों ने प्रभावित किया है, अपितु अरब, अफगान, मुगल और इंग्लिश लोगों ने भी इस पर अपनी छाप छोड़ी है। भारतीय संस्कृति एक समुद्र के समान है, जिसमें अन्य संस्कृतियाँ समा गई हैं। वैदिक युग में प्राचीन आर्यों ने संस्कृति के जिस प्रवाह को प्रारंभ किया था शक, कुषाण, यवन, हूण, आभीर, अफगान, मुगल, अंग्रेज आदि कितनों ने ही इसे प्रभावित किया, परन्तु इससे इसके प्रवाह की धारा अवरुद्ध नहीं हुई, बल्कि इसकी शक्ति और अधिक बढ़ती ही गई।

20वीं शताब्दी के चौथे दशक में सिंधु घाटी सभ्यता के विशेष चिह्न हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई में मिले। इसका काल लगभग 2500 अथवा 2700 वर्ष ई.पू. माना जाता है अर्थात् सिंधु घाटी सभ्यता प्राचीनतम एवं व्यवस्थित सभ्यता है। 1921-22 में सिंधु या हड़प्पा सभ्यता की निर्णायक खोज ने भारत को विश्व के ऐतिहासिक मानचित्र पर, प्राचीनतम सभ्यता के उदय की जन्मस्थली मिस्र एवं मेसोपोटामिया के समतुल्य ला दिया। भारतीय संस्कृति के निर्माण में सबसे बड़ा योगदान आर्यों का है, जो द्रविड़ों के बाद भारत में आये। इनका काल लगभग 1500 वर्ष ईसा पूर्व माना जाता है।

राजनैतिक ढाँचा और संस्कृति पर उसका प्रभाव-भारतीय संस्कृति की निरन्तरता को भारतीय संस्कृति के विकास के परिप्रेक्ष्य में सरलता से समझा जा सकता है। प्रत्येक संस्कृति का विकास एक भौगोलिक तथा वांशिक वातावरण में होता है। इसलिए प्रत्येक संस्कृति का स्वरूप भिन्न दृष्टिगोचर होता है। वास्तव में उन्हें अपनाने तथा ग्रहण करने वाले विभिन्न मानव-वंशों के समूहों की विशिष्ट मौलिक शक्ति ही संस्कृतियों के विभिन्न स्वरूपों के

निर्माण का मूल कारण है। इतिहासकारों का मत है कि एक संस्कृति वाले मानवों का समूह पूर्ण रूप से दूसरी संस्कृति को कभी अपना नहीं पाता। प्रत्येक मानव समूह अपने से भिन्न संस्कृति का अनुकरण केवल बाहरी रूप में ही कर पाता है। वह अन्य संस्कृति के आदर्शों, भावनाओं, प्रेरणाओं, विधि-विधानों तथा संस्थाओं को अपनाते समय उनमें अपनी मौलिक प्रकृति तथा प्रवृत्ति के अनुरूप परिवर्तन कर लेता है।

बाहरी प्रभाव और संस्कृति—संस्कृतियों का संघर्ष, मिलन तथा आदान-प्रदान होता रहता है। इन प्रक्रियाओं में कभी-कभी संस्कृतियाँ एक-दूसरे में विलीन हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, प्राचीन काल में संपर्क में आने पर आर्यों की संस्कृति ने सैधव सभ्यता की लिंग-पूजा तथा शिव-पूजा अपनायी। मध्य युग में अरबों की संस्कृति ने भारतीय संस्कृति के संपर्क में आने पर भारत की चिकित्सा-प्रणाली तथा बीजगणित अपना लिये। इसी प्रकार इस्लाम के अनेक अनुयायियों ने भारत में हिंदू संस्कृति के कुछ तत्वों को अपना लिया। प्राचीन मध्य युग तथा आधुनिक युग में संस्कृतियों को अपनाने वाले विशाल तथा प्रख्यात राष्ट्रों और मानव समूहों ने संस्कृति के अंगों का आदान-प्रदान सरल व सहज भाव से किया।

भारतीय संस्कृति के दार्शनिक सिद्धांतों को यूनान की संस्कृति ने अपनाया। अरबों ने यूनानी संस्कृति के प्रमुख तत्वों को अपनाने के साथ-साथ उसमें वृद्धि भी की। कहने का तात्पर्य यह है कि आज किसी भी विकसित देश की संस्कृति सैकड़ों वर्षों से प्रचलित विभिन्न संस्कृतियों का ही परिष्कृत स्वरूप है। भारतीयों ने अपने खान-पान, वेश-भूषा, रहन-सहन आदि सभी में सुधार किया। यह प्रगति केवल बड़े नगरों तक सीमित नहीं है, अपितु छोटे नगरों और गाँवों तक भी फैली है। आज एक भारतीय 60 वर्ष पहले की तुलना में अपने जीवन की आवश्यकताओं, सामाजिक उत्सवों और धार्मिक कार्य-कलापों पर कई गुना अधिक धन व्यय कर रहा है। पहले की तुलना में आज भारत में सड़क, यातायात और संचार-साधन, कृषि, उद्योग, बैंक व्यवस्था आदि जीवन की सुख-सुविधाओं के साधन बहुत अच्छी स्थिति में हैं।

सांस्कृतिक जागरूकता और इतिहास—इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि स्वतंत्रता के बाद सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से भारत में गम्भीर परिवर्तन हुए हैं। सम्भवतया पिछले दो सौ वर्षों अथवा इससे भी अधिक समय में भारत में इतना परिवर्तन नहीं हुआ था। सांस्कृतिक क्षेत्र में तो मात्र पिछले बीस वर्षों में हुए परिवर्तन इतने गंभीर हैं, जो पिछली सदियों तक भी नहीं हुए थे। भूमंडलीकरण के दौर में जब सारी चीजों में परिवर्तन आया है और उथल-पुथल भी हुई है, तो इसके खतरे भारतीय संस्कृति के सामने भी आए हैं। यहाँ के लोग पाश्चात्य संस्कृति में ढलना चाह रहे हैं, जबकि विदेशों में भारतीय संस्कृति काफी लोकप्रिय हो रही है। यदि हम अपने इतिहास पर नजर डालें, तो लोक तथा जनजातीय परंपराएँ विभिन्न राजनीतिक संरचनाओं में परिवर्तन के दौरान भी अप्रभावित रही हैं। हालाँकि राजनीतिक शक्ति संरचना में समय-समय पर शास्त्रीय परंपराओं के महत्त्व में भी परिवर्तन हुए हैं। लेकिन लोक तथा जनजातीय परंपराओं में कभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

परंपरागत भारत में शास्त्रीय परंपरा के महत्त्व और लोक तथा जनजातीय संस्कृति को हमेशा स्वीकारा गया है। दूसरी ओर, पश्चिमी शास्त्रीय सांस्कृतिक परंपरा में लोक तथा जनजातीय परंपराओं के प्रति कोई झुकाव दिखाई नहीं पड़ता। नई पीढ़ी के लोग लोक तथा जनजातीय संस्कृति को प्राचीन परंपराओं के रूप में देखते हैं। इनसे विमुख होकर वे अपने आपको आधुनिक कहलाना पसंद करते हैं और पश्चिमी संस्कृति में डूबे रहना चाहते हैं।

ऐतिहासिक विकासक्रम

प्राचीन काल से लेकर अब तक न जाने कितनी संस्कृतियाँ और सभ्यताएँ आई और काल के गाल में समा गईं। कई संस्कृतियाँ उभरीं, फली-फूलीं और उन्नति के शिखर पर पहुँच गईं। इनमें साहित्य, दर्शन, कला, विज्ञान आदि का विकास हुआ। अनेक दार्शनिक, चिंतक, विचारक, कलाकार और वैज्ञानिक पैदा हुए। महान और प्रतापी सम्राट तथा वीर योद्धा उत्पन्न हुए, जिन्होंने अपनी शक्ति से अपने साम्राज्य का विस्तार किया। बड़े-बड़े महल और भवन बनवाए, अपने देवी-देवताओं के नाम पर विशाल मंदिर स्थापित किए। इन संस्कृतियों का काफी समय तक बोलबाला रहा, अब उनकी मात्र कहानी इमारतों और स्मारकों में सिमटकर रह गई है। कुछ खंडहर पर्यटकों के लिए दर्शनीय हो गए हैं। प्राचीन सिक्कों, मूर्तियों, शिलालेखों आदि के रूप में कुछ चिह्न संग्रहालयों की शोभा बढ़ा रहे हैं। शेष का न पुराना धर्म रहा, न उनकी परंपरा रही और न ही उनके देवी-देवता। अब केवल उनकी स्मृति मात्र शेष रह गई है। इन संस्कृतियों में मिस्र देश की संस्कृति सात-आठ हजार वर्ष पुरानी थी। इस संस्कृति की स्थापत्य कला के अदभुत चिह्न आज भी आश्चर्य की वस्तु बने हुए हैं। प्राचीन बेबिलोनियन संस्कृति और असीरियन संस्कृति ईराक के रेगिस्तान में समा गई है। प्राचीन ईरानी संस्कृति के अब मात्र अवशेष रह गए हैं, जो अपनी थोड़ी-बहुत गाथा बता पाते हैं।

भारतीय संस्कृति ही एक ऐसी संस्कृति है, जो आज तक अपनी अविरल धारा को बहाती हुई चली आ रही है। यह अन्य प्राचीन संस्कृतियों से भिन्न एक अनोखी संस्कृति है। इसकी प्राचीनता के बारे में बताना कठिन है। अधिकतर विद्वान इसे सात-आठ हजार वर्ष पुरानी मानते हैं। खोज करने पर भारतीय संस्कृति का विकसित रूप सबसे पहले सिंधु-सरस्वती के क्षेत्र में पाया गया है। यह क्षेत्र सिंधु नदी के बीच का इलाका है। इसे सिंधु सभ्यता के नाम से अभिहित किया गया, किंतु वास्तव में वह और कुछ नहीं, भारतीय सभ्यता ही है। सिंध के जिस स्थान पर खुदाई की गई और जहाँ इस सभ्यता का विकास हुआ, उसका नाम 'मोहनजोदड़ो' है। वहाँ एक टीला खोदने से एक समूचे नगर के भग्नावशेष या खंडहर मिले हैं। अनेक दुर्लभ वस्तुएँ प्राप्त हुईं, जिनसे पता चला कि उस प्राचीन काल में भारतीय सभ्यता कितनी समृद्ध और उन्नत थी।

हड़प्पा युग—सिंधु घाटी के मोहनजोदड़ो और हड़प्पा नामक स्थानों की खुदाई से यह अनुमान लगाया गया है कि उस समय नागरिक सभ्यता अपने चरम उत्कर्ष पर थी। ये नगर 3000 ई.पू. से

4 / NEERAJ : भारतीय संस्कृति : पर्यटन परिदृष्टि

कम प्राचीन नहीं माने जाते। इन नगरों के मकान कई मंजिलों के होते थे तथा बड़े-बड़े और बढ़िया पकी हुई ईंटों के मजबूत बने होते थे। सड़कों के दोनों किनारों पर नालियों, वर्षा के जल-निकासी की योजना और नालियों को स्वच्छ रखने के लिए मल कुंडों की व्यवस्था के आगे आधुनिक भारत की ऐसी व्यवस्था फीकी पड़ जाती है। वास्तव में सिंधु घाटी की संस्कृति कांस्य युग की मानी जाती है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में जो औजार मिले हैं, वे काँसे के हैं। ऐसा अनुमान है कि 3000 ई.पू. ईरान की सभ्यता भी उतनी ही समृद्ध थी। फारस की खाड़ी के समुद्री मार्ग से भारत के साथ इसका व्यापार चलता था। इससे सिद्ध होता है कि 5000 वर्ष पूर्व भारतीय संस्कृति के विकास के स्पष्ट संकेत हमें वैदिक साहित्य में मिल जाते हैं। भारत के मध्य भाग में स्थित विंध्य पर्वत ने शताब्दियों तक उत्तरापथ और दक्षिणापथ के मानव समाज को अलग-अलग सांस्कृतिक चेतना के विकास का अवसर प्रदान किया। पुराणों के अनुसार यह सुमेरु पर्वत है, जिस पर आज से दस लाख वर्ष पूर्व एक उन्नत मानव सभ्यता का निवास था। बाद में महाप्लावन के उपरांत यह सभ्यता नष्ट हो गई। इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति के विकास का मूल उत्स दक्षिण के पठारी भाग को मानना उचित होगा, जहाँ अनेक जनजातियों या आदिम जातियों का निवास रहा है। दक्षिण के पठार में पत्थरों के अस्त्र भी मिले हैं, जिनके सहारे पूर्व-पाषाण युग, पाषाण-युग तथा उत्तर-पाषाण युग की अवधारणा रखी गई। इस प्रकार अन्य संस्कृतियों की भाँति भारतीय संस्कृति का विकास भी उन सोपानों से हुआ, जिनमें विश्व की प्रत्येक मानव सभ्यता को गुजरना पड़ा है। इन सोपानों का क्रमबद्ध इतिहास अभी तक लिखा नहीं जा सका। आदिम समाज कृषि से अनभिज्ञ था। जंगली पशुओं का शिकार और कंदमूल उसके भोज्य पदार्थ थे। वह भवन-निर्माण करना भी सीख नहीं पाया था। यह समाज पूर्ण रूप से साम्यवादी था। इसके किसी भी सदस्य के पास कोई चल या अचल संपत्ति नहीं थी। यह समाज पूर्ण मातृसत्तात्मक था, जिसमें माता ही परिवार का केन्द्र रहती थी। इस काल में नैतिक मूल्यों की स्थापना नहीं हो पाई थी।

वैदिक सभ्यता—प्राचीन भारत का सामाजिक और सांस्कृतिक स्वरूप वेदों में सुरक्षित है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद—ये चारों वेद हमारी संस्कृति के मूल आधार हैं। वेदों के मंत्रों की व्याख्या करने के लिए ब्राह्मण ग्रंथों की रचना हुई। वेदों का सही अर्थ जानने के लिए सहायक शास्त्रों के रूप में 'वेदांग' लिखे गए। वेदांग छः हैं—शिक्षा, व्याकरण, छंद, निरुक्त, ज्योतिष और कल्प। इस काल को वैदिक काल कहते हैं। इस काल में समाज की रचना का आधार वर्ण व्यवस्था थी। यह व्यवस्था चार वर्णों में विभाजित थी—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। यह वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित नहीं थी, वरन कर्म पर आधारित थी। व्यक्ति के जीवन को चार आश्रमों में बाँटा गया था—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम। वैदिक काल में राजतंत्र की पद्धति थी, किंतु कहीं-कहीं गणतंत्र की शासन पद्धति भी प्रचलित थी। गणतंत्र के अंतर्गत कुछ लोगों का वर्ग शासक चुनता था। कर्म को ही धर्म माना जाता था। कर्म आत्मा के संस्कार के लिए आवश्यक है। यज्ञ, दान, तपस्या, सेवा आदि कर्म व्यक्ति और समाज की रक्षा करते हैं।

बौद्ध काल—बौद्ध काल में भारतीय संस्कृति में अनेक परिवर्तन आए। इस समय उदित होने वाले धार्मिक आंदोलनों ने तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार किया। यह काल मानव संस्कृति के विकास के लिए एक प्रकाश-स्तंभ है। इसमें उत्तरापथ और दक्षिणापथ की संस्कृतियों का समन्वय मिलता है। विभिन्न जातियों के मध्य अंतर्विवाह, धार्मिक विश्वासों और जीवन-पद्धतियों के आत्मीकरण और परिष्कार से सांस्कृतिक समन्वय का प्रमाण भी मिलता है। इस युग में नई सांस्कृतिक चेतना तो पैदा हुई, किंतु साथ में अंधविश्वासों और धार्मिक रूढ़ियों का भी सूत्रपात हुआ। बौद्ध और जैन मत के प्रभाव से वैदिक धर्म प्रभावहीन होने लगा। दूसरी ओर पुराणकारों ने बुद्ध को अपने अवतारों की सूची में रख लिया, जिससे बौद्ध धर्म को आघात पहुँचा।

गुप्तकाल—गुप्तवंश के दो सौ वर्षों के राज्यकाल में भारतीय संस्कृति उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुँच गई थी। साहित्य, धर्म, ललित कला, स्थापत्य कला, वाणिज्य आदि के विकास में यह युग महत्त्वपूर्ण था। गुप्तकालीन ललित कलाओं में तत्कालीन भौतिक समृद्धि के संकेत मिलते हैं। इस काल में उच्च कोटि का साहित्य सृजन हुआ। पाणिनि ने संस्कृत भाषा का परिष्कार किया और बाद में कालिदास ने उसे सौन्दर्य प्रदान किया। गुप्तकाल में संस्कृत साहित्य की जितनी रचना हुई उतनी शायद ही किसी अन्य काल में हुई हो। विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति हुई। गणित में दशमलव प्रणाली का सूत्रपात हुआ। तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालयों में विभिन्न विषयों की शिक्षा उच्च कोटि की थी, इसलिए यह काल भारतीय संस्कृति का श्रेष्ठ युग कहलाता है।

पूर्व-मध्यकाल—पूर्व-मध्य काल में भारत का सांस्कृतिक नेतृत्व और संरक्षण दक्षिण भारत करता था। तमिलनाडु में पल्लव, चोल और पांड्य वंश के राजाओं का शासन था। इन राजाओं के शासन में वास्तुकला और शिल्पकला को विशेष प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। कुंभकोणम, मदुरै, चिदंबरम, श्रीरंगम, कांचीपुरम, रामेश्वरम आदि स्थानों में ऐसे मंदिर मिलते हैं, जो उस युग की कला के प्रमाण हैं। इसी प्रकार कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, केरल आदि की कलाओं के दर्शन होते हैं। भारत के पूर्व में उड़ीसा के भुवनेश्वर में कोणार्क का सूर्य मंदिर अपना विशेष स्थान रखता है। यह मंदिर एक रथ के आकार का है, जो विराट पहियों पर स्थित है। इस प्रकार भारत की विभिन्न कलाओं का भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान है।

मध्यकालीन भारतीय संस्कृति अपनी विभिन्नता के लिए प्रसिद्ध है। इसका इतिहास एक हजार वर्ष से भी अधिक पुराना माना जाता है। सम्राट हर्षवर्धन के बाद विदेशी आक्रमणों का तांता-सा लग गया। अतः इस काल में भारतीय संस्कृति पुनर्निर्माण का प्रयास तो करती रही, किंतु कोई अद्भुत विकास नहीं हो पाया। इस काल में भारतीय भाषाओं का अधिक-से-अधिक विकास हुआ। इस काल में जब मुगल साम्राज्य स्थापित हुआ, तो साहित्य के साथ-साथ संगीत का भी पुनरुद्धार हुआ।

इस्लाम धर्म ने भारतीय संस्कृति को भी प्रभावित किया। स्थापत्य कला तथा चित्रकला में इस प्रभाव की झलक पूर्णतया दिखाई देती है। आगरा का ताजमहल, दिल्ली का लाल किला,